सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 31
अंक – 122 | जुलाई – 2013

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

।। ऊँ श्री साईनाथाय नमः।।

।। ऊँ श्री सद्‌गुरूनाथ दादाय नमः।।

गुरूपौर्णिमा–ज्ञान–कर्म–धर्म अवस्था और तीर्थस्वरूप जीजी

गुरूबंधुभगिनीयों से,

हम सब गुरूभक्तों के जीवन में गुरू पौर्णिमा का महत्व क्या होता है यह समझने के लिए प्रथमतः हमें दो चीजों का अभ्यास करना आवश्यक है यानी ज्ञान होना चाहिए।

1. गुरू मतलब कौन/क्या?
2. हम गुरूमार्गी हुये है, इसका मजलब क्या है?

वं. दादाजी ने कहा था की गुरू इस शब्द में दो अक्षर है, पहले अक्षर का मायना है 'गुहय' यानी गुण या जीवन के कारण का ज्ञान और दूसरे अक्षर का मायना है 'रूजवणारा' मतलब बीज बोने वाला। गुरू का मतलब होता है जो अपने जीवन के कारण के ज्ञान बीज स्वरूप में पहचान कर उसे बोता है और विकसित करता है जिससे आने वाले भक्तों के जीवन सार्थक हो जाये।

हम सभी के जीवन में वं. दादाजी ने परमार्थ का 'गुहय' (Sccret of spiritual use) बोया है मगर प.पूज्य दादाजी के इस सिद्ध मार्ग की खासियत यह है कि मार्ग को सिद्ध कर के उसे विकसित कर के सेवक के लिए, गुरू स्वरूप प्राप्त करने का साधन भी सिद्ध करके रखा है। यह एक असामान्य समाज के लिए मिसाल है परमार्थ में किताबें पढ़कर लोगों को सुनाना यह दुनिया में हमें कई स्थानों पर नज़र आता है लेकिन परमार्थ को हासिल कर आने वाले भक्तों को गुरू स्वरूप बनाना यह सिर्फ इस गुरू मार्ग की विशेषता है। इसलिये वं. दादाजी ने, कितने ज्यादा भक्त आये इससे ज्यादा आने वाला हर एक भक्त कितना ज्यादा विकसित हुआ, इस पर हमेशा जोर दिया।

इस गुरूमार्ग का प्राथमिक उद्देश्य जो वं. दादाजी ने कहा था वह इस प्रकार है कि, हम मानवों को जिस बहुमूल्य जीवन का लाभ हुआ है, उस जीवन में सिर्फ ऐहिक विषयों का उपभोग लेने के लिए अपना पूरा जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान होकर, इस जनम का जो कारण है, वह कार्यान्वित होकर हमारे प्राप्त जन्म का गुरूकृपा से सार्थक हो।

इतना विशाल उद्देश्य इस गुरूमार्ग की स्थापना के पिछे होकर आज भी हर आने वाला भक्त मतलब हम सभी लोग ऐहिक प्रश्न पूछते रहते हैं लेकिन यह नहीं सोचते कि

हम अपना विकास कैसे प्राप्त करें। जिस खुदा मालिक ने हमारे इस जन्म का कारण उदित किया है उसका उपयोग आने वाले जन्म और दुनिया के लिए कैसे करें।

इस गुरूमार्ग में वं. दादाजी ने सभी उपयुक्त सिद्ध अवस्था, सूफी, दत्त और नाथ पंथों की सिद्धता हमारे सामने रखी है, जो कोई भी योगी संसार का त्याग करके पहाड़ पर पूरे जन्म तपःश्चर्या करके भी प्राप्त नहीं कर सकता। लेकिन आज हमें इस बात की अहमियत नहीं है दिन के 24 घंटों में से 35 मिनट की ऊँकार साधना हर रोज़ एकाग्र चित्त से हम में से कितने भक्त आज कर रहे है? जैसे ऑफिस की मीटिंग के लिए भागकर हम जाते है वैसे ईश्वर के साथ यह अपनी मीटिंग है। इन 35 मिनटों में हम किसी के नहीं सिर्फ अपने गुरू के पास हैं, क्या यह सोचकर हमारी साधना होती है। टेलिफोन बजने पर या कुकर की सीटी बजने पर क्या हमारा ध्यान ऊँकार साधना में कायम रहता है इसका विचार करना आज की अवस्था में आवश्यक है।

आज हमें सिर्फ सुख चाहिये, वो भी बिना कुछ किये बल्कि इच्छा पूरी करने के लिए उसका कितना कर्म हमारे पास है इसका विचार है ही नहीं। संसार में व्यवहार चलता है, अगर कोई चीज हमें चाहिये तो उसकी किमत चुकानी पड़ती है। अगर किसी से कुछ लिया तो वह चीज़ या उसकी किमत उसे देनी पड़ती है, यह संसार का व्यवहार हैं फिर सुख की कीमत, कृपाशीर्वाद की कीमत हम गुरू को क्या दे रहे हैं? श्री गुरू को पैसा नहीं चाहिये, क्योंकि जब घर में खाने के लिए भी अनाज नहीं था, पैसा नहीं था जब भी वं. दादाजी ने प.पू. बाबा से पैसा नहीं मांगा, तो जगत कल्याण करने के लिए कार्य की सिद्धता करने के लिये कहा, उस कार्य में खुद का बलिदान दिया तो आज वे हमसे पैसा क्यों मागेंगे? यह भी सोचना चाहिए कि क्या हम कोई चीज़ गुरू को दे सकते हैं? श्री गुरू जो कृपाशीर्वाद देते है, जो सुख–शांति–समाधान हमें देते है उसकी कीमत के स्वरूप में हमसे सेवा मांगते है समाज के लिए और यही हमारा परोपकार है। गुरू की सेवा मतलब नियमित स्वरूप में ऊँकार साधना परमार्थ प्रश्नावली में बताये अनुसार आचरण और आरती एवं मुलाकात साधना के लिए अपनी उपस्थिति।

यह कार्य श्री गुरू को हमारे माध्यम से करना है। कितनी भी प्रतिकूल परिस्थिति आने पर भी हमारी श्रद्धा दृढ़ रहनी चाहिये।

जून महीने में उत्तराखंड में समस्या पैदा हुई, मनुष्य हानि, वित्त हानि हुई; बाढ़ में कई घर बह गये, तब हम में से कितने लोगों ने ऊँकार साधना करने के बाद उनके लिये श्रीगुरू से प्रार्थना की?

आज अगर जगत के सारे लोग श्री सद्गुरू नामः स्मरण सिर्फ 11 बार करे और 'मानवी जीवन ईश्वरमय हो' यह प्रार्थना करे तो विश्वशांति होना कोई बड़ी बात नहीं। लेकिन हमने चर्चा तो काफी की होगी, हर रोज न्यूज देखी फिर भी प्रार्थना कितनी बार ऊँकार साधना करके की, यह प्रश्न है?

इस प्रकार की सेवा श्री गुरू को हमारे माध्यम से अपेक्षित है। इसका ज्ञान होना चह परमार्थ की प्राथमिक अवस्था है।

'ज्ञान अवस्था' :

जो ज्ञान हम पाठशाला या कॉलेज में लेते है, उसका विनियोग नौकरी, धंधा करके पारिवारिक खर्चे चलाने में करते हैं वह ज्ञान अलग होता हैं यह ज्ञान है अपने जीवन का ज्ञान, या गुरूमार्ग का ज्ञान और गुरूमार्गी होनेके बाद अपने कर्त्तव्य का ज्ञान। यह बहुत ही विशाल विषय है, जितना भी ज्ञान हमें मिले वह कम है, यही जीवन के हर एक दिन की सिखलाई होती है और उसका बोध लेने के लिए गुरूप्रसाद और आत्मनिवेदन ग्रंथ वं.दादाजी ने लिखे है। उसी प्रकार हर एक मुलाकात साधना में भी हमें इसी ज्ञान का लाभ होता है।

इस अवस्था में 'बोध लेना' यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। हम शोध लेने की (खोजने की) कोशिश करते है और बोध को छोड़ देते है। अगर हर एक पल से बोध लेने की कोशिश करे तो श्री गुरू के कृपाशीर्वाद का अनुभव आने लगेगा। यही गुरूभक्त की ज्ञान अवस्था है।

'कर्म अवस्था' :

जब भक्त अपनी ज्ञान अवस्था में जीवन के हर एक अनुभव से बोध लेने लगता है तब उसे बाकी सेवकों की तरफ देखकर कभी–कभी खुद में कोई कमी है क्या, ऐसा सवाल पैदा होता हैं वास्तव में श्री गुरू सभी भक्तों को एक जैसा कृपाशीर्वाद प्रदान करते है लेकिन हर एक के जीवन में जो कमियाँ है, उसके पिछे कोई न कोई कारण होता है। वह कारण कब और किस तरह पूरा होगा, यह अधिक गहन सवाल है लेकिन वह कमियाँ गुरूकृपा से जरूर पूरी होगी यह आत्मविश्वास पैदा कर कार्य केन्द्र पर सेवा करना यह उसका कर्त्तव्य है। गुरूकृपा सभी भक्त पर है, उसका अनुभव इस अवस्था में लेना होता है। जब औरों का कल्याण हो यह भावना उत्पन्न होते ही गुरूशक्ति प्रवाहित होने लगती है। इतना सुलभ गुरूमार्ग कोई दूसरा नहीं होगा

इस अवस्था में भक्त गुरूशक्ति का मध्यस्त बनता है। जब गुरूशक्ति पुरी तरह प्रवाहित होकर आने वाले लोगों में प्रवाहित होती है। जिस बर्तन में से औरों की प्यास गुरू बुझाते हैं वह बर्तन सुखा नहीं रहता। तब उनके जीवन में कोई भी सवाल नहीं बचता। अपेक्षा 10 Y सेवक की तो 100 Y कार्य होता है लेकिन उचित समय पर। आज जो नए भक्त आते है, उनके जीवन में गुरूकृपा Direct काम करती है और उनके कर्म की प्रतिकूलता गुरूकृपा से दूर होती है, लेकिन इस कर्म अवस्था में यह कार्य सेवक को खुद को करना पड़ता है। तब गुरूकृपा से उनका विकास होता है जिससे, कर्म के साथ उस अवस्था में खेल सकते है। कौनसा कर्म कब कहाँ चाहिये उस हिसाब से गुरूकृपा से उसे कार्यान्वित करना होता है। यह कार्यक्षमता प्राप्त होने के लिए ऊँकार साधना है। जब सेवक अवस्था में अपने काम फटाफट नहीं होते; तब जरूरी होती है सबुरी। वह सबुरी अपना विकास करती है; वह विकास मतलब मानवीय जीवन का पूर्णत्व है।

'धर्म अवस्था':

धर्म अवस्था में सेवक गुरूस्वरूप हो जाता है। धर्म मतलब निसर्ग धर्म। इस अवस्था में मानवीय देह निसर्ग धर्म के हिसाब से अपनी दिनचर्या करता है। निसर्ग की हर एक चीज परोपकार करती है उसी प्रकार धर्म अवस्था में वह मध्यस्त दूसरों के लिए अपना जीवन व्यतीत करता है। जिन गुरूओं के कृपाशीर्वाद से यह अवस्था प्राप्त हुई उनका अखंड स्मरण रखकर मिलने वाले हर एक व्यक्ति को सुख–शांति–समाधान गुरूकृपा से प्राप्त कर देने का प्रयास साधक इस अवस्था में अखंड करता है। इसी का मतलब है मानवीय जीवन ईश्वरमय होना।

आज की गुरू पौर्णिमा के शुभअवसर पर हम अपने गुरू का स्मरण करके गुरूकृपा से जो कर्त्तव्य हमें करना है उसकी निश्चितता करे। उपर बताई हुई अवस्थाएँ प्राप्त कर हम में से एक गुरूभगिनी, जिनका बलिदान इस कार्य में बहुत बड़ा है मतलब श्री दीपक भाई की माँ, तीर्थ स्वरूप जीजी का स्मरण आज हमें करना चाहिए।

पिछले महिने 17 जून 2013 रोजी वे श्री गुरूचरणों में विलीन हई, तब उनकी उम्र 97 वर्ष की थी। अनेक प्रतिकूल परिस्थिति में भी उनकी श्री गुरू पर की गई श्रद्धा किंचित स्वरूप में भी कम नहीं हुई। श्री दीपक दादा ने कहा था कि, जितने भी प्रखर दोष होते हैं वह लगभग सभी दोषों का निराकरण वं. दादाजी ने उनके परिवार में किया था।

संपत्ति नाश होना, खेती में पूरी तरह नुकसान होना, 50 साल से ज्यादा कोई भी आदमी परिवार में जिन्दा न रहना, इत्यादि अनेक प्रकार के दोष होने के बावजूद भी वं. जीजी श्री गुरू से एकनिष्ठ थी। वं. दादाजी की भेंट होने के बाद लगभग डेड़ साल में श्री दिपक भाई के पिताजी गुजर गये लेकिन जाने से पहले उन्होंने वं. जीजी को कहा था कि "अगर दुनिया में कहीं ईश्वर है तो वह वं. दादाजी है; उनके मार्गदर्शन के अनुसार ही जिदंगी बिताना।"

जब द्वारकामाई बन रही थी तो भक्तों को आह्वान किया था, तब वं. जीजी रो रही थी कि उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं हैं, तब वं. दादाजी ने उन्हें दीपक भाई को कार्य करने के लिए मांगा और घर में विकट परिस्थिति होने पर भी जब श्री दीपक भाई इंजिनियरींग कर रहे थे तब हँसते–हँसते उनको वं. दादा के कार्य के लिए सौंप दिया। श्री दीपक भाई, वं. दादाजी की परछायी थी और वं. जीजी के वजह से ही वे यह कार्य कर सके। वं. जीजी आखीर के 12–13 साल Wheel - chair पर थी लेकिन बातों में वं. दादाजी की विभूतियों की यादे हमेशा रहती थी। सभी सेवकों को आदर देकर बुलाती थी। काफी बार वह सेवकों को झुककर प्रणाम करती थी और कहती थी कि आप वं. दादाजी का कार्य कर रहे हो तो मेरे लिये भी आप गुरू स्थान पर हो।

इतनी विनर्मता, इतना त्याग इस कार्य के लिए शायद ही कोई और कर सकेगा।

उनकी आत्मा को वं. दादाजी के चरणों में सद्गति प्राप्त हुई होगी इसमें कोई शंका नहीं लेकिन कोई भी व्यक्ति गुजर जाने के बाद दसवे दिन से उस आत्मा के सप्तलोक का प्रवास शुरू होता है, वैसे ही वं. जीजी का यह प्रवास शुरू हुआ है वं. दादाजी के शुभ दिन पर।

हम सभी को गुरूभक्ति की, श्रद्धा की प्रेरणा वं. जीजी के जीवन से मिले और उनकी आत्मा को गुरूरचणों में स्थान मिले, यह वं. दादाजी और परम् पूज्यनिय बाबा के चरणों में प्रार्थना।

।। शुभं भवतु।।

जनम जनम का सेवक

1. You may ask where I am now and how I can meet you now. But I am within your heart and we can meet without any efforts.
2. Speak the truth at any cost. Speak a little, speak sweetly.
3. All living creatures-insects, ants, creature of the water and the sky, dogs and pigs, I am always present within them. I am in all and everywhere.
4. It should be always borne in mind that one's real self is not the body or things pertaining to it. One's self is different from the body, one's self is the seer.
5. Do not keep the distance from me. There is no difference betweeen you and me. Whosoever regards ME in this way, he is indeed fortmate.

अपने सपने ना दिखाओ मुझको हरदम, कुछ सपने तो मुझे भी देखने दो

अपनी बातें न कहो हरदम मुझसे, कुछ तो मुझको भी कहने दो

अपनी रफ्तार से मुझकों न भगाओ हरदम, मुझे अपने गति से भी चलने दो

अपने सपने – अपने अरमान – अपनी तकदीर

मुझे एक बार..... बस एक बार आज़माने दो, मेरे भी साथ कभी चलो कदम दो कदम.

मुझे बस अपने साथ रहने दो..... मुझे बस अपने पास रहने दो

सूचना

इस साल की होने वाली सेमीनार "द्वारकामाई" जयपुर में 18 अक्टूबर से 22 अक्टूबर 2013 तक होना निश्चित हुआ है अधिक से अधिक गुरूबन्धु–भगनी आने का प्रयत्न करें। आने की सूचना देहली केन्द्र पर सितम्बर 2013 तक भेजने का कष्ट करें।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@hotmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible